भा.वा.अ.शि.प.-हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा "चिलगोजा के सरंक्षण और टिकाऊ प्रबंधन की आवश्यकता " विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

भा.वा.अ.शि.प.-हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा दिनांक 24 मार्च, 2025 को वन विश्राम गृह, छोलतू में चिलगोजा के सरंक्षण के लिए भा.वा.अ.शि.प.-पलान परियोजना "हिमाचल प्रदेश और जम्मू एवं कश्मीर में संरक्षण के लिए पाइनस जिरारडियाना की जनसंख्या का आकलन, पारिस्थितिकीय मॉडलिंग और टिकाऊ कटाई तकनीक का विकास" के तहत "चिलगोजा के सरंक्षण और टिकाऊ प्रबंधन की आवश्यकता" विषय पर जागरूकता प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें रामणी पंचायत के 40 किसानों तथा बागवानों ने भाग लिया ।

कार्यक्रम के आरम्भ में श्री ऋषभ शर्मा, कनिष्ठ परियोजना अध्येता ने प्रतिभागियों का प्रशिक्षण कार्यक्रम में पधारने पर हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन किया तथा प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए बताया कि भा.वा.अ.शि.प.-हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला, पश्चिमी हिमालयी क्षेत्रों, हिमाचल प्रदेश और जम्मू कश्मीर तथा लद्दाख केन्द्र शासित प्रदेशों में वानिकी के क्षेत्र मे शोध कार्य कर रहा है तथा साथ ही साथ शोध के परिणामों को अपने हितधारकों से साँझा कर रहा है । साथ ही साथ उन्होंने संस्थान में होने वाले शोध कार्यों एवं वर्तमान गतिविधियों के बारे भी प्रतिभागियों को विस्तृत जानकारी दी ।

इस अवसर पर प्रशिक्षण समन्वयक डॉ. स्वर्ण लता, वैज्ञानिक-ई ने कहा कि चिलगोजा जिला किन्नौर का परिस्थितिक, सामाजिक एवं आर्थिक रूप से एक महत्वपूर्ण वृक्ष है । यह किन्नौर के लोगों की आय का मुख्य स्त्रोत होने के साथ-साथ उनके आहार एवं रीति-रिवाजों का भी अभिन्न् अंग है । हिमाचल प्रदेश में यह प्रजाति किन्नौर (2040 हेक्टेयर) तथा चम्बा (20 हेक्टेयर) जिले में पायी जाती है, परन्तु चिलगोजा शंकुओं को एकत्रित करने के लिए की जाने वाली शाखाओं की अवैज्ञानिक तरीके से कटाई आज के समय में किन्नौर वन क्षेत्र की बहुत बड़ी समस्या बनी हुई है जिससे न केवल वृक्षों को अत्याधिक क्षति पहुँच रही है अपितु प्राकृतिक पुनर्जनन के साथ-2 पैदावार में भी लगातार कमी हो रही है । यदि यह स्थिति यथावत बनी रही तो वह दिन दूर नहीं जब यह वृक्ष इस क्षेत्र से लुप्त हो जाएंगे और लोग इससे होने वाले सभी प्रकार के लाभ से हमेशा के लिए वंचित हो जायेंगे । इसलिए इस तरह की विनाशकारी कटाई से होने वाले नुकसान से बचने के लिए न केवल वैज्ञानिक हस्तक्षेप अपितु स्थानीय लोगों के हस्तक्षेप की भी अत्याधिक आवश्यकता है ताकि इस क्षेत्र में चिलगोजा वृक्षों को हो रही क्षति से बचाया जा सके । इससे न केवल आने वाली भावी पीढ़ियों को इस बहुमूल्य वन सम्पदा का लाभ पहुंचेगा अपितु अन्य पर्यावरणीय सेवाएँ भी प्राप्त होती रहेंगी । प्रतिभागियों से कहा कि यह किन्नौर में रहने वाले हर एक नागरिक की जिम्मेदारी है कि वे चिलगोजा जैसे अनमोल प्राकृतिक संसाधन की रक्षा के लिए स्वेच्छा से आगे आकर अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें । साथ ही साथ उन्होंने लोगों से अनुरोध भी किया कि वे आगामी चिलगोजा ओकशन के लिए होने वाले ग्राम सभा की बैठक में सभी ग्राम वासियों को चिलगोजा की वर्तमान स्थिति एवं संरक्षण की आवश्यकता के बारे में बताएँगे तथा साथ ही साथ ठेकेदारों को सतत कटाई एवं 5-10 शंकुओं को वृक्षों पर छोड़ने के निर्देश दें ताकि चिलगोजा के वृक्षों को कम क्षति पहुंचे एवं प्राकृतिक पुनर्जनन बढ़ सकें ।

श्री मुकेश कुमार, परियोजना सहायक, ने अपने व्याख्यान में किसानों तथा बागवानों को "चिलगोजा के नर्सरी तकनीक एवं रोपण" एवं 'चिलगोजा के पैदावार को बढ़ाने के लिए वृक्षारोपण हेतु अच्छी गुणवत्ता के पौधों के चयन की आवश्यकता' के बारे में विस्तृत जानकारी दी । उन्होंने लोगो को बताया की चिलगोजा किन्नौर के लोगों के जीवन का अभिन्न अंग है तथा वर्तमान में बहुत से मानवजनित खतरों के कारण यह भविष्य में विलुप्त हो सकता है । इसलिए वन विभाग एवं स्थानीय लोगों साथ में मिलकर चिलगोजा का पौध रोपण करना होगा ताकि चिलगोजा के नये जंगल तैयार हो पायें ।

कार्यक्रम के अंत में श्री ऋषभ शर्मा एवं श्री मुकेश कुमार ने किसानों को साथ के चिलगोजा वन क्षेत्र में ले जाकर 'मल्टी एंगुलर लॉन्ग रीच प्रूनर के संचालन तथा इसकी सहायता से चिलगोजा शंकुओं को तोड़ने की विधि' के बारे में फील्ड डेमोन्सट्रेशन के माध्यम से बताया । इस अवसर पर अपने विचार प्रकट करते हुए श्री संत राम, रमणी पंचायत ने संस्थान के प्रयास की सराहना की और कहा चिलगोजा के जंगलों के सरंक्षण के लिए भा.वा.अ.शि.प.-हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला की पहल सरहना की तथा यह भी कहा कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम से किसान एवं बागवान ज़रूर जागरूक एवं लाभान्वित होंगे तथा भविष्य में भी इस तरह के कार्यक्रमों के आयोजन का आग्रह भी किया ताकि समस्थ ग्रामवासी चिलगोजा संरक्षण हेतु जागरूक हो पाएँ । कार्यक्रम का अंत प्रशिक्षण समन्वयक डॉ .स्वर्ण लता के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ ।

प्रशिक्षण कार्यक्रम की झलकियां

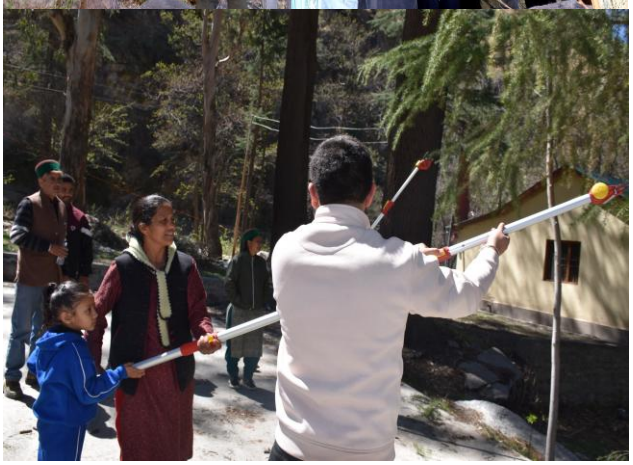

चिलगोजा के संरक्षण और टिकाऊ प्रबंधन की आवश्यकता
पर
एक दिवसीय जागरूकता प्रशिक्षण कार्यक्रम

मीडिया कवरेज

किन्नौर में अवैज्ञानिक कटाई से खतरे में चिलगोजा के पेड़

छोल्तू में प्रशिक्षण कार्यक्रम में किसानों-बागवानों को सिखाई चिलगोजा के संरक्षण और प्रबंधन की बारीकियां

संवाद न्यूज एजेंसी

भावानगर (किन्नौर)। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला ने वन विश्राम गृह छोल्तू में चिलगोजा के संरक्षण और प्रबंधन को लेकर जागरुकता प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया।

शिविर में रामणी पंचायत के 40 किसानों-बागवानों ने भाग लिया। कार्यक्रम में विशेषज्ञों ने चिलगोजा के पेड़ों की अवैज्ञानिक कटाई पर चिंता व्यक्त की गई। विशेषज्ञों ने कहा कि अवैज्ञानिक कटाई से चिलगोजा के पेड़ खतरे में हैं। कार्यक्रम में ऋषभ शर्मा और मुकेश कुमार ने चिलगोजा की कटाई के लिए मल्टी एंगुलर लांग रीच प्रूनर का उपयोग किसान-बागवानों को बताया।

छोलतू में बागवानों को चिलगोजा की कटाई के बारे में जानकारी देता कर्मचारी। स्रोत : वन विभाग

किन्नौर के किसानों-बागवानों की आय से जुड़ा है चिलगोजा

समन्वयक डॉ. स्वर्ण लता ने कहा कि चिलगोजा जिला किन्नौर का पारिस्थितिक, सामाजिक और आर्थिक रूप से एक महत्वपूर्ण वृक्ष है, लेकिन चिलगोजा शंकुओं को एकत्रित करने के लिए की जाने वाली शाखाओं की अवैज्ञानिक तरीके से कटाई आज बड़ी समस्या बन गई है। इन वृक्षों से चिलगोजा शंकुओं को एकत्रित करने के लिए शाखाओं की अनियंत्रित कटाई से न केवल इसका पुनर्जनन कम हो रहा है, बल्कि शंकुओं के उत्पादन पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। यदि यही स्थिति बनी रही, तो वो दिन दूर नहीं जब यह वृक्ष इस क्षेत्र से लुप्त हो जाएंगे। लोग इससे होने वाले लाभ से हमेशा के लिए वंचित हो जाएंगे, इसलिए हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान ने चिलगोजा के संरक्षण के लिए इस जागरुकता प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से लोगों को जागरूक करने की पहल की है और प्रशिक्षण कार्यक्रम में चिलगोजा संरक्षण में शंकुओं के तुड़ान की महत्वता के बारे में जानकारी दी।